

द्वादशश्लोत्रेषु षष्ठश्लोत्रः

देवकिनन्दन नन्दकुमार वृन्दारनाञ्चन गोकुल चन्द्र ।  
कन्दफलाशन सुन्दररूप नन्दित गोकुल रन्दितपाद ॥ १ ॥

इन्द्रसुतारकनन्दन हस्त चन्दनचर्चित सुन्दरिनाथ ।  
इन्दौररोदर दलनयन मन्दरधारिन् गोरिन्द रन्दे ॥ २ ॥

चन्द्रशतानन कुन्दसुहास नन्दितदैरतानन्द सुपूर्ण ।  
मत्स्यकरूपलघोद रिहारिन् रेदरिनेत् चतुर्मुख रन्द्य ॥ ३ ॥

कूर्मस्वरूपक मन्दरधारिन् लोकविधारक देवररेण्य ।  
सूकररूपक दानरशत्रो भूमिधारक यज्ञरराङ्ग ॥ ४ ॥

देव नृसिंह हिरण्यकशत्रो सर्वभयाङ्कक दैरतवङ्घो ।  
रामन रामन माणररेष दैत्यररा(कुलाङ्)ङ्कक कारण रूप (भूत) ॥ ५ ॥

राम भृगृद्वह सृजितदीप्तै ऋद्रकुलाङ्कक शङ्भुररेण्य ।  
राघर राघर राक्षस शत्रो मारुति रत्नभ जानकी काङ्क ॥ ६ ॥

देवकि नन्दन सुन्दररूप रूक्मिणि (गी) रत्नभ पाङ्कक वङ्घो ।  
दैत्य रिमोहक नित्य सखादे देरसु (रि) बोधक बुद्ध स्वरूप ॥ ७ ॥

दुष्ट कुलाङ्कक कङ्कस्वरूप धर्म विरधन मूलयुगादे ।  
नारायणामलकारण मूर्ते पूर्ण गुणार्णर नित्य सुबोध ॥ ८ ॥

सुख(आनन्द)तीर्थ मुनीन्द्र कृपा हरिगाथा पापहराशुभनित्य सुखार्थ

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगरत्पादाचार्य विरचितः  
द्वादशश्लोत्रेषु षष्ठश्लोत्रः संपूर्णः